FAROOQE AA'ZAM KA ISHQE RASOOL
(HINDI BAYAAN)

फ़ारूक़े आ'ज़म का इश्क़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

फ़ारूक़े आ'ज़म का इश्क़े रसूल

نَوَيْتُ سُنَّتَ الاعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

शाफ़ेए उमम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े, उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब** हो जाती है।

(الترغیب والترہیب ج۲ص۳۲۹، حدیث۳۱)

"اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ"

गर लबे पाक से इक़रारे शफ़ाअ़त हो जाए
यूं न बे चैन रखे जो शिशे इस्यां हम को

शे'र की वज़ाह़त : ऐ मेरे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर आप के मुबारक लबों से इस बात का इक़रार हो जाए कि हां आप मेरी शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे तो मेरे गुनाहों का जोश मुझे बे चैन न कर सकेगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعجمُ الکبیر لِلطّبرانی ج٦ ص١٨٥ حدیث ٥٩٤٢)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा। ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा। ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा। ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा। ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ، اُذْكُرُوا اللّٰهَ، تُوْبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा। ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान करने की निय्यतें

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा। ۞ देख कर बयान करूंगा। ۞ पारह 14 सूरतुन्नह़्ल, आयत 125 **:** ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَ لَوْ اٰيَةً "पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो" में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा। ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा। ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इ़ल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा। ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा, बराए नेकी

www.dawateislami.net

की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा । ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा । ۞ नज़र की हिफ़ाज़त का ज़ेह्न बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان अपनी अपनी जगह बे मिस्लो बे मिसाल हैं, सब ही आस्माने हिदायत के तारे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के प्यारे हैं, लेकिन इन में से बा'ज़ को बा'ज़ पर फ़ज़ीलत ह़ासिल है और सब सह़ाबा में अफ़्ज़ल ख़ुलफ़ाए राशिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم हैं, इन्ही ख़ुलफ़ा में से दूसरे ख़लीफ़ए राशिद, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं, आप का यौमे विसाल यकुम मुह़र्रमुल ह़राम है । आइये ! इसी मुनासबत से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़िन्दगी के एक रोशन पहलू "**इश्क़े रसूल**" के बारे में सुनने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं ।

पहले कुछ मन्क़बते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अश्आ़र "वसाइले बख़्शिश" से सुनते हैं ।

ख़ुदा के फ़ज़्ल से मैं हूं गदा फ़ारूक़े आ'ज़म का
ख़ुदा उन का मुह़म्मद मुस्त़फ़ा फ़ारूक़े आ'ज़म का
करम अल्लाह का हर दम नबी की मुझ पे रह़मत है
मुझे है दो जहां में आसरा फ़ारूक़े आ'ज़म का
भटक सकता नहीं हरगिज़ कभी वोह सीधे रस्ते से
करम जिस बख़्तवर पर हो गया फ़ारूक़े आ'ज़म का
इलाही ! एक मुद्दत से मेरी आंखें प्यासी हैं
दिखा दे सब्ज़ गुम्बद वासित़ा फ़ारूक़े आ'ज़म का
शहादत ऐ ख़ुदा अ़त्त़ार को दे दे मदीने में
करम फ़रमा इलाही ! वासित़ा फ़ारूक़े आ'ज़म का

www.dawateislami.net

फ़ारूक़े आ'ज़म और सरकार की दिलजूई !

हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : एक मरतबा रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़मगीन ह़ालत में अपने मेहमान ख़ाने में तशरीफ़ फ़रमा थे । मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ुलाम के पास आया और कहा कि "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मेरे दाख़िल होने की इजाज़त मांगो ।" उस ने वापस आ कर कहा : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में आप का ज़िक्र तो किया है मगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कोई जवाब इरशाद नहीं फ़रमाया । थोड़ी देर बा'द मैं ने फिर कहा कि "नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मेरी ह़ाज़िरी की इजाज़त मांगो ।" वोह गया और वापस आ कर फिर कहा : "मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से आप का ज़िक्र किया मगर आप ने कोई जवाब नहीं दिया ।" मैं कुछ कहे बिग़ैर वापस पलटा तो ग़ुलाम ने आवाज़ दी कि "आप अन्दर आ जाइये ! इजाज़त मिल गई है ।" चुनान्चे, मैं अन्दर गया आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सलाम किया । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक चटाई पर टेक लगाए तशरीफ़ फ़रमा थे, जिस के निशानात आप के पहलू पर वाज़ेह़ नज़र आ रहे थे, फिर मैं खड़े खड़े रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दिलजूई के लिये अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : اَسْتَاْنِسُ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं आप के साथ बातें कर के आप को मानूस करना चाहता हूं । हम क़ुरैश जब मक्कए मुकर्रमा में थे तो अपनी औ़रतों पर ग़ालिब थे और यहां मदीनए मुनव्वरा में आ कर हमारा ऐसी क़ौम से वासित़ा पड़ा, जिन पर औ़रतें ग़ालिब हैं ।" येह सुन कर हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुस्कुराए । मैं ने कहा : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास गया था और उन से कहा : आप अपने साथ

www.dawateislami.net

वाली (या'नी ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) पर कभी रश्क न करना क्यूंकि वोह तुम से ज़ियादा ह़सीन और शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पसन्दीदा ज़ौजा है।" येह सुन कर सरकारे नामदार मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दोबारा मुस्कुरा दिये।

(بخاری، کتاب النکاح، باب موعظۃ الرجل ابنتہ لحال زوجہا، ج۳، ص: ۴۶۰، حدیث: ۵۱۹۱، ملتقطا)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए से अन्दाज़ा लगाइये कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह भी गवारा न था कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी तक्लीफ़ या ग़म में मुब्तला हों, इसी लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने प्यारे आक़ा, ह़बीबे किब्रिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मानूस करना चाहा और बिल आख़िर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने इस इरादे में कामयाब भी हो गए और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन की बातों पर मुस्कुरा दिये। ज़रा ग़ौर कीजिये ! एक त़रफ़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का येह आ़लम है कि वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ग़मज़दा देख कर उदास हो जाते और आप की दिलजूई के लिये त़रह़ त़रह़ की कोशिश करते और एक हम हैं कि शबो रोज़ गुनाहों में बसर करते हुवे नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते बा बरकत को अज़िय्यत पहुंचाते हैं मगर हमें इस का ज़रा भी एह़सास नहीं। याद रखिये ! इस बात में शक नहीं कि आज भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने उम्मतियों के तमाम अह़वाल को मुलाह़ज़ा फ़रमाते हैं। चुनान्चे, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : मेरी ज़िन्दगी तुम्हारे लिये बेहतर है तुम मुझ से बातें करते हो और मैं तुम से, और मेरी वफ़ात भी तुम्हारे लिये बेहतर, तुम्हारे आ'माल मुझ पर पेश किये जाएंगे, जब मैं कोई भलाई देखूंगा तो ह़म्दे इलाही बजा लाऊंगा और जब बुराई देखूंगा तुम्हारी बख़्शिश की दुआ करूंगा।

(البحر الزخار، المعروف بمسند البزار، حدیث: ۱۹۲۵ مکتبہ العلوم والحکم ۵/ ۳۰۸ و ۳۰۹)

ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने हर उम्मती और उस के हर अ़मल से ख़बरदार हैं। हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहें अन्धेरे, उजाले, ख़ुली,

www.dawateislami.net

छुपी, मौजूद व मा'दूम हर चीज़ को देख लेती है। जिस की आंख में माज़ाग़ का सुर्मा हो, उस की निगाह हमारे ख़्वाबो ख़याल से ज़ियादा तेज़ है, हम ख़्वाबो ख़याल में हर चीज़ को देख लेते हैं, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم निगाह से हर चीज़ का मुशाहदा कर लेते हैं। सूफ़िया फ़रमाते हैं कि यहां आ'माल में दिल के आ'माल भी दाख़िल हैं, लिहाज़ा हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे दिलों की हर कैफ़िय्यत से ख़बरदार हैं। (مراٰۃ،ج۱،ص:۴۳۹)

तुम हो शहीदो बसीर और मैं गुनह पर दिलैर
खोल दो चश्मे हया तुम पे करोड़ों दुरूद

शे'र की वज़ाहत : ऐ मेरे प्यारे नबी (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) आप को **अल्लाह** तआ़ला ने काइनात के ज़र्रे ज़र्रे पे गवाह बना कर भेजा और जहां का कोई गोशा आप से पोशीदा न रहा, आप सब कुछ देख रहे हैं और येह भी देख रहे हैं कि मैं गुनाहों पे किस क़दर जरी व दिलैर हूं, मेरी शर्मो हया की आंख खोल दें ताकि गुनाह करते हुवे शर्मा जाऊं, आप (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर **अल्लाह** तआ़ला करोड़ों रह़मतें फ़रमाए।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने उम्मतियों के तमाम अह़वाल से बा ख़बर हैं तो हमारे नेक आ'माल देख के ख़ुश और बुरे आ'माल से ग़मगीन भी होते होंगे। लिहाज़ा हमें चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये ज़ियादा से ज़ियादा नेक आ'माल करें, आप की ज़ाते बा बरकत पर कसरत से दुरूदो सलाम के गजरे निछावर करें, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल करें और दूसरों को भी सिखाएं ताकि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुश हो कर रोज़े मह़शर अपने गुनहगार उम्मतियों की शफ़ाअ़त फ़रमा कर जन्नत में हमें भी अपने साथ लेते जाएं।

www.dawateislami.net

या इलाही जब पड़े महशर में शोरे दारोगीर अम्न देने वाले प्यारे पेशवा का साथ हो
या इलाही जब ज़बाने बाहर आएं प्यास से साहिबे कौसर शहे जूदो अ़ता का साथ हो
या इलाही सर्द मेहरी पर हो जब ख़ुर्शीदे हश्र सय्यिदे बे साया के ज़िल्ले लिवा का साथ हो
या इलाही गर्मिये मेहशर से जब भड़कें बदन दामने महबूब की ठन्डी हवा का साथ हो
या इलाही नामए आ'माल जब खुलने लगें ऐब पोशे ख़ल्क़ सत्तारे ख़ता का साथ हो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तआरुफ़े सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

ख़लीफ़ए दुवुम, जा नशीने पैग़म्बर, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की कुन्यत "अबू ह़फ़्स" और लक़ब "फ़ारूक़े आ'ज़म" है। एक रिवायत में है आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه 39 मर्दों के बा'द, ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ़ से ऐ'लाने नबुव्वत के छटे साल ईमान लाए, इसी लिये आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को मुतम्मिमुल अरबईन या'नी "40 का अ़दद पूरा करने वाला" कहते हैं। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के इस्लाम क़बूल करने से मुसलमानों को बेह़द ख़ुशी हुई और उन को बहुत बड़ा सहारा मिल गया यहां तक कि ह़ुज़ूर रह़मते आ़लम, जाने आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुसलमानों के साथ मिल कर ह़रमे मोह़तरम में ऐ'लानिया नमाज़ अदा फ़रमाई। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इस्लामी जंगों में मुजाहिदाना शान के साथ बर सरे पैकार रहे और तमाम मन्सूबा बन्दियों में शाहे ख़ैरुल अनाम, रसूले आ़ली मक़ाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वज़ीर व मुशीर की हैसिय्यत से वफ़ादार व रफ़ीक़े कार रहे। ख़लीफ़ए अव्वल, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब फ़रमाया, आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने तख़्ते ख़िलाफ़त पर रौनक़ अफ़रोज़ रह कर जानशीनिये मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तमाम तर ज़िम्मेदारियों को बहुत ही अच्छे अन्दाज़ से सर अन्जाम दिया।

www.dawateislami.net

बिल आख़िर नमाज़े फ़ज्र में एक बदबख़्त ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर ख़न्जर से वार किया और आप ज़ख़्मों की ताब न लाते हुवे तीसरे दिन शरफ़े शहादत से सरफ़राज़ हो गए । ब वक़्ते वफ़ात आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उ़म्र शरीफ़ 63 बरस थी । ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और गोहरे नायाब, फ़ैज़ाने नबुव्वत से फ़ैज़याब ख़लीफ़ए रिसालत मआब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रौज़ए मुबारका के अन्दर ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पहलूए अन्वर में मदफ़ून हुवे, जो कि सरकारे अनाम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक पहलू में आराम फ़रमा हैं । (الرّیاض النضرۃ فی مناقب العشرۃ ج۱ ص۲۸۵،۴۰۸،۴۱۸، ملخصاً)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो ।

शहादत ऐ ख़ुदा अ़त्तार को दे दे मदीने में

करम फ़रमा इलाही ! वासित़ा फ़ारूक़े आ'ज़म का

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वालिदैन, भाई बहन, अवलाद और माल व जाएदाद से मह़ब्बत इन्सान में फ़ित्री त़ौर पर होती है । अगर कोई शख़्स अपने अहलो इ़याल और अ़ज़ीज़ो अक़ारिब को भुला कर इन की मह़ब्बत को दिल से निकाल भी दे तो उस के ईमान में कोई ख़राबी नहीं आएगी और उस का ईमान ब दस्तूर क़ाइम रहेगा, क्यूंकि इन अफ़राद को मानना, इन की मह़ब्बत को दिल में बसाए रखना, ईमान के लिये ज़रूरी नहीं जब कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाना, आप की ता'ज़ीम करना, आप से मह़ब्बत रखना, ईमान के लिये जुज़्वे ला यनफ़क (या'नी वोह ह़िस्सा जो जुदा न हो सके) है, लिहाज़ा मोमिने कामिल के लिये ज़रूरी है तमाम रिश्तों और काइनात की हर शै से मह़बूब तरीन, उसे सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ात हो ।

www.dawateislami.net

हर शै से महबूब

बुख़ारी शरीफ़, ह़दीस नम्बर 6632 में है :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन हिशाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हम सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास बैठे थे । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हाथ अपने हाथ में पकड़ रखा था । सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : ''لَاَنْتَ اَحَبُّ اِلَیَّ مِنْ کُلِّ شَیْءٍ اِلَّا مِنْ نَّفْسِی'' या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप मुझे मेरी जान के इ़लावा हर चीज़ से ज़ियादा मह़बूब हैं । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَا وَالَّذِی نَفْسِی بِیَدِہٖ حَتّٰی اَکُوْنَ اَحَبَّ اِلَیْکَ مِنْ نَّفْسِکَ नहीं उ़मर ! उस रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! (तुम्हारी मह़ब्बत उस वक़्त तक कामिल नहीं होगी) जब तक मैं तुम्हारे नज़दीक तुम्हारी जान से भी ज़ियादा मह़बूब न हो जाऊं ।'' सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : ''وَاللّٰہِ لَاَنْتَ اَحَبُّ اِلَیَّ مِنْ نَّفْسِی'' या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप मुझे मेरी जान से भी ज़ियादा मह़बूब हैं ।'' येह सुन कर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''اَلْاٰنَ یَا عُمَرُ'' या'नी ऐ उ़मर ! अब (तुम्हारी मह़ब्बत कामिल हो गई ।)

(بخاری، کتاب الایمان والنذور، باب کیف کانت یمین النبی، ج۴، ص۲۸۳، حدیث: ۶۶۳۲۔)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह हुक्म सिर्फ़ फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये ही नहीं बल्कि रहती दुन्या तक आने वाले एक एक मुसलमान के लिये है, क्यूंकि मह़ब्बते मुस्त़फ़ा वोह चीज़ है, जिस के बिग़ैर हमारा ईमान कामिल ही नहीं हो सकता । फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : لَایُؤْمِنُ اَحَدُکُمْ حَتّٰی اَکُوْنَ اَحَبَّ اِلَیْہِ مِنْ وَّالِدِہٖ وَوَلَدِہٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِیْن या'नी तुम में से कोई शख़्स उस

www.dawateislami.net

वक़्त तक मोमिन (कामिल) नहीं हो सकता, जब तक कि मैं उस के नज़दीक उस के वालिदैन, अवलाद और तमाम लोगों से ज़ियादा महबूब न हो जाऊं।''

(صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب حب الرسول من الایمان، الحدیث ۱۵، ج ۱، ص ۱۷)

यक़ीनन ! एक मुसलमान को प्यारे आक़ा, हबीबे किब्रिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ऐसी ही महब्बत होनी चाहिये क्यूंकि येही इस की ज़िन्दगी का सब से क़ीमती असासा है।

तुम्हारी याद को कैसे न ज़िन्दगी समझूं येही तो एक सहारा है ज़िन्दगी के लिये

मेरे तो आप ही सब कुछ हैं रहमते आ़लम मैं जी रहा हूं ज़माने में आप ही के लिये

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के इश्क़े रसूल के क्या कहने ! जब आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की याद आती तो आप बे क़रार हो जाते और फ़िराक़े महबूब में गिर्या व ज़ारी करते, चुनान्चे, आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के ग़ुलाम हज़रते सय्यिदुना अस्लम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : जब आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र करते तो इश्क़े रसूल से बे ताब हो कर रोने लगते और फ़रमाते : ''प्यारे आक़ा, सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो लोगों में सब से ज़ियादा रहम दिल, यतीम के लिये वालिद और लोगों में दिली तौ़र पर सब से ज़ियादा बहादुर थे, वोह तो निखरे निखरे चेहरे वाले, महकती ख़ुश्बू वाले और हसब के ए'तिबार से सब से ज़ियादा मुकर्रम थे, अव्वलीनो आख़िरीन में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मिस्ल कोई नहीं।'' (جمع الجوامع، ج ۱۰ ص ۱۶، حدیث ۳۳)

www.dawateislami.net

है कलामे इलाही में शम्सुद्दुहा तेरे चेहरए नूरे फ़ज़ा की क़सम

क़समे शबे तार में राज़ येह था कि हबीब की ज़ुल्फ़े दो ता की क़सम

तेरे ख़ुल्क़ को हक़ ने अ़ज़ीम कहा तेरी ख़िल्क़ को हक़ ने जमील किया

कोई तुझ सा हुवा है न होगा शहा तेरे ख़ालिक़े हुस्नो अदा की क़सम

फ़ारूक़े आ'ज़म का अ़क़ीदए महब्बत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नबिय्ये करीम, महबूबे रब्बे अ़ज़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे आक़ा व मौला हैं, हम सब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अदना ग़ुलाम हैं और ग़ुलाम चाहे कैसे ही आ'ला मर्तबे पर क्यूं न पहुंच जाए मगर अपने मौला की महब्बत और उस की अ़क़ीदत हमेशा उस के दिल में क़ाइम रहती है, वोह उस के एहसानात को कभी फ़रामोश नहीं करता, हर एक के सामने बड़े फ़ख़्रिय्या अन्दाज़ में अपने आक़ा की ता'रीफ़ करता और उस का ग़ुलाम होने में ख़ुशी महसूस करता है । हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه भी एक सच्चे आ़शिक़े रसूल, क़त्ई जन्नती और सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में आ'ला मर्तबे पर फ़ाइज़ सहाबिये रसूल हैं । आप भी महब्बते रसूल में सरशार हो कर ख़ुद हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ादिम और ग़ुलाम होने पर फ़ख़्र महसूस करते हैं ।

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जब मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ हुवे तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने बर सरे मिम्बर फ़रमाया : ''كُنْتُ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكُنْتُ عَبْدَهٗ وَخَادِمَهٗ'' या'नी मैं हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सोहबते बा बरकत से फ़ैज़ याफ़्ता रहा हूं, पस मैं हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ग़ुलाम और ख़िदमत गार रहा हूं ।''

(مستدرک حاکم، کتاب العلم، خطبۃ عمر بعد ماولی۔۔۔الخ، ج۱ص۳۳۲، ح:۴۴۵)

www.dawateislami.net

मैं तो कहा ही चाहूं कि बन्दा हूं शाह का

पर लुत्फ़ जब है कह दें अगर वोह जनाब हूं

शे'र की वज़ाहत : मैं तो कहता हूं कि मैं अपने आक़ा (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का बन्दा या'नी ग़ुलाम हूं, ऐ मेरे आक़ा (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) लुत्फ़ तो तब है कि हुज़ूर फ़रमाएं, हां तू मेरा ग़ुलाम है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ग़ुलामिये रसूल का दा'वा सिर्फ़ ज़बान की हद तक नहीं था बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वाक़ेई सच्चे ग़ुलाम थे, सारी ज़िन्दगी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल करते हुवे बसर फ़रमाई। लेकिन अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस हम ग़ुलामिये रसूल का दम भरते और इस त़रह़ के दा'वे तो करते नज़र आते हैं कि

जान भी मैं तो दे दूं ख़ुदा की क़सम ! कोई मांगे अगर मुस्त़फ़ा के लिये

मगर हमारा किरदार इस के बर अ़क्स दिखाई देता है। याद रखिये ! मह़ब्बते रसूल सिर्फ़ इस बात का नाम नहीं कि इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त और ज़ुलूसे मीलाद में बुलन्द आवाज़ से झूम झूम कर ना'त शरीफ़ पढ़ी जाए, हाथ उठा कर ज़ोर ज़ोर से ना'रे लगाए जाएं और फिर सारी रात जागने के बा'द नमाज़े फ़ज्र पढ़े बिग़ैर ही सो जाएं, आ़म दिनों में भी पांचों नमाज़ें ह़त्ता कि जुमुआ़ तक न पढ़ें, प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी सुन्नत दाढ़ी शरीफ़ मुंडवाएं या एक मुठ्ठी से घटाएं, सुन्नतों को छोड़ कर नित नए फ़ैशन अपनाएं, हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आने के बजाए बद अख़्लाक़ी और दीगर बुराइयां भी न निकाल पाएं तो ऐसी मह़ब्बत कामिल कैसे होगी ? जब कि ह़क़ीक़ी मह़ब्बत तो इस बात का तक़ाज़ा करती है कि

www.dawateislami.net

हुक़ूक़ की अदाएगी में सरकारे दो जहां, शफ़ीए आ़सियां, वकीले मुजरिमां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ऊंचा माना जाए, वोह इस त़रह़ कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लाए हुवे दीन को तस्लीम करें, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व अदब बजा लाएं और हर शख़्स और हर चीज़ या'नी अपनी ज़ात, अपनी अवलाद, मां-बाप, अ़ज़ीज़ो अक़ारिब और अपने मालो अस्बाब पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा व ख़ुशनूदी को मुक़द्दम रखें। और जिस काम से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमा दिया, उस से बचने की कोशिश भी करते रहें, अगर ब तक़ाज़ाए बशरिय्यत उस का इर्तिकाब कर बैठें तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से बख़्शे जाने और रोज़े महशर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त पाने की उम्मीद रखते हुवे सच्ची तौबा करें और आयिन्दा उस गुनाह की त़रफ़ जाने का ख़याल भी अपने दिल में न लाएं। आइये ! इस बात की सच्चे दिल से निय्यत करते हैं कि आज के बा'द हमारी कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं होगी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बल्कि आज तक जितनी नमाज़ें क़ज़ा हुई हैं तौबा कर के उन्हें अदा भी करेंगे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ झूट, ग़ीबत, चुग़ली, वा'दा ख़िलाफ़ी, धोका देही वग़ैरहा गुनाहों से बचते रहेंगे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ैशन परस्ती को छोड़ कर सुन्नत के मुत़ाबिक़ लिबास पहनेंगे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़िल्में ड्रामे, गाने बाजे छोड़ कर सिर्फ़ मदनी चैनल देखेंगे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मैं बचना चाहता हूं हाए फिर भी बच नहीं पाता

गुनाहों की पड़ी है ऐसी आ़दत या रसूलल्लाह

कमर आ'माले बद ने हाए ! मेरी तोड़ कर रख दी

तबाही से बचा लो जाने रह़मत या रसूलल्लाह

www.dawateislami.net

मेरे मुंह की सियाही से अन्धेरी रात शर्माए

मेरा चेहरा हो ताबां नूरे इज़्ज़त या रसूलल्लाह

ब वक़्ते नज़्अ आक़ा हो न जाऊं मैं कहीं बरबाद

मेरा ईमान रख लेना सलामत या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 328)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कामिल महब्बत की अलामतों में से एक येह भी है कि मुहिब या'नी महब्बत करने वाले को अपने महबूब से तअल्लुक़ रखने वाली हर हर चीज़ से महब्बत हो। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की महब्बते रसूल के क्या कहने ! सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه न सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते बा बरकात से महब्बत फ़रमाते बल्कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अवलाद, अज़वाज, अस्हाब बल्कि हर वोह चीज़ जिसे आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ निस्बत हो जाती उस से भी वालिहाना अक़ीदत और महब्बत फ़रमाते और येही हक़ीक़ी महब्बत के तक़ाज़ों में से है। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की सीरते तय्यिबा के बे शुमार वाक़िआत ऐसे हैं, जिन से इसी हक़ीक़ी महब्बत व इश्क़ का वालिहाना इज़्हार होता है, आइये इन में से एक वाक़िआ सुनते हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पारह 30 सूरतुल बलद की पहली और दूसरी आयत में इरशाद फ़रमाता है :

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۙ﴿۱﴾ وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۙ﴿۲﴾ (پارہ:۳۰،البلد:۱،۲)	***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *मुझे इस शहर की क़सम कि ऐ महबूब तुम इस शहर में तशरीफ़ फ़रमा हो।*

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुफ़स्सिरीने किराम का इस बात पर इजमाअ़ (या'नी इत्तिफ़ाक़) है कि इस आयते करीमा में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस शहर की क़सम याद फ़रमा रहा है, वोह मक्कए मुकर्रमा है । इसी आयत की त़रफ़ इशारा करते हुवे अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जनाब में यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : या रसूलल्लाह ! मेरे मां-बाप आप पर फ़िदा हों ! आप की फ़ज़ीलत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां इतनी बुलन्द है कि आप की ह़याते मुबारका की ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़सम ज़िक्र फ़रमाई है न कि दूसरे अम्बिया की और आप का मक़ामो मर्तबा उस के हां इतना बुलन्द है कि उस ने **لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ** के ज़रीए आप के मुबारक क़दमों की ख़ाक की क़सम ज़िक्र फ़रमाई है ।''

(شرح زرقانی علی المواھب، الفصل الخامس۔۔۔ الخ، ج۸، ص۴۹۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा रिवायत से मा'लूम हुवा कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मक्कए मुकर्रमा से इस लिये भी मह़ब्बत फ़रमाते कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मह़बूब आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस शहर में तशरीफ़ फ़रमा हैं । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا से भी ऐसी ही मह़ब्बत फ़रमाते थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا से इ़श्क़ो मह़ब्बत इस बात से भी ज़ाहिर होती है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में वफ़ात की दुआ फ़रमाया करते थे । और वोह यूं कि बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करते : اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنِی شَھَادَۃً فِی سَبِیْلِکَ وَاجْعَلْ مَوْتِی فِی بَلَدِ رَسُوْلِکَ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे अपनी राह में शहादत अ़त़ा फ़रमा और मुझे अपने मह़बूब के शहर में मौत अ़त़ा फ़रमा । (بخاری، کتاب فضائل المدینۃ، باب کراھۃ النبی۔الخ، ج۱، ص۶۲۲، حدیث:۱۸۹۰)

www.dawateislami.net

और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह दोनों दुआएं मक़्बूल व मुस्तजाब हुई । *Allah عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।*

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

शहादत ऐ ख़ुदा अ़त्तार को दे दे मदीने में

करम फ़रमा इलाही ! वासित़ा फ़ारूक़े आ'ज़म का

(वसाइले बख़्शिश, स. 527)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ारूक़े आ'ज़म और इत्तिबाए रसूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर कोई किसी से मह़ब्बत का दम भरता है तो उस जैसा बनने, उस की अदाओं को अपनाने और उस की पैरवी में ही सारी ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश करता है । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इ़श्क़े रसूल का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हर मुआ़मले में दो आ़लम के आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा, ह़बीबे किब्रिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ (या'नी पैरवी) करते । चुनान्चे,

बढ़ी हुई आस्तीनों को छूरी से काट लिया :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नई क़मीस पहनी तो छुरी मंगवाई और फ़रमाया : "ऐ बेटे ! इस की लम्बी आस्तीनों को सिरे से पकड़ कर खींचो और जहां तक मेरी उंगिलयां हैं, इन के आगे से कपड़ा काट दो ।" सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने उसे काटा तो वोह बिल्कुल सीधा नहीं बल्कि ऊपर नीचे से कटा । मैं ने अ़र्ज़ किया : "अब्बा जान ! अगर इसे क़ैची से काटा जाता तो बेहतर रहता ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "बेटा ! इसे ऐसे ही रहने दो

www.dawateislami.net

क्यूंकि मैं ने शफ़ीउ़ल मुज़निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ऐसे ही काटते देखा था। इस लिये मैं ने भी छुरी से आस्तीनें काट दीं।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के आस्तीन काटने के बा'द कुर्ते की ह़ालत येह थी कि इस से बा'ज़ धागे बाहर निकल निकल कर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के क़दमों के बोसे लेते रहते थे।

(مستدرک حاکم، کتاب اللباس، کان نبی اللہ۔۔۔الخ، ج۵، ص۲۷۵، حدیث:۷۴۹۸۔)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़रा ग़ौर कीजिये ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ज़ाते मुबारका में प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इ़श्क़े रसूल और आप का सुन्नतों पर अ़मल का जज़्बा किस क़दर कूट कूट कर भरा हुवा था कि आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ में आप ने भी छुरी ही से आस्तीन काट ली लेकिन वोह सह़ीह़ न कटी, फिर भी आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इसी ह़ालत में इस क़मीस को पहनने में कोई शर्म व आ़र महसूस नहीं की, येह कमाल दरजे का इत्तिबाए़ सुन्नते मुस्त़फ़ा था। इसी त़रह़ दीगर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के सुन्नतों से महब्बत और इस पर अ़मल का येह आ़लम था कि दुन्या की कोई कशिश और बे वफ़ा मुआ़शरे की कोई झूटी "मुरव्वत" इन से सुन्नत न छुड़ा सकती थी। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه (जो कि वहां मुसलमानों के सरदार थे एक मरतबा) खाना खा रहे थे कि उन के हाथ से लुक़्मा गिर गया, उन्हों ने उठा लिया और साफ़ कर के खा लिया। येह देख कर गंवारों ने आंखों से एक दूसरे को इशारा किया (कि कितनी अ़जीब बात है कि गिरे हुवे लुक़्मे को उन्हों ने खा लिया) किसी ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अमीर का भला करे, ऐ हमारे सरदार ! येह गंवार तिरछी निगाहों से इशारा करते हैं कि अमीर साह़िब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने गिरा हुवा लुक़्मा खा लिया ह़ालांकि उन के सामने येह खाना मौजूद है।

www.dawateislami.net

''उन्हों ने फ़रमाया : '' इन अ़जमियों की वज्ह से मैं उस चीज़ को नहीं छोड़ सकता, जिसे मैं ने सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना है। हम एक दूसरे को हुक्म देते थे कि लुक़्मा गिर जाए तो उसे साफ़ कर के खा लिया जाए, शैत़ान के लिये न छोड़ा जाए।''

(ابن ماجہ شریف ج ٤ ص ١٧ حدیث ٣٢٧٨)

رُوحِ اِیماں مَغْزِ قرآں جانِ دیں
ھَسْت حُبِّ رَحْمَةٌ لِّلْعٰلَمِیْں

शे'र का ख़ुलासा : हमारे प्यारे आक़ा, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत ईमान की रूह़, क़ुरआने करीम का मग़्ज़ (या'नी ख़ुलासा) और दीन की जान है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? जलीलुल क़द्र सह़ाबी और मुसलमानों के सरदार सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه सुन्नतों से किस क़दर प्यार करते थे। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़जमियों के इशारों की ज़र्रा बराबर परवाह न की और बे धड़क सुन्नतों पर अ़मल जारी रखा। आज बा'ज़ नादान मुसलमान ऐसे भी हैं कि ''मॉडर्न माह़ोल'' में दाढ़ी मुबारक जैसी अ़ज़ीमुश्शान सुन्नत के तर्क को مَعَاذَ الله عَزَّوَجَلَّ ''ह़िक्मते अ़मली'' तसव्वुर करते हैं। ह़क़ीक़ी ह़िक्मते अ़मली येही है कि लाख बुरा माह़ोल हो, अग़्यार का ज़ोर हो, बे दीनियों का शोर हो, अल ग़रज़ कैसा ही दौर हो, आप दाढ़ी शरीफ़, इ़मामए पाक और सुन्नतों भरे सादा लिबास में मल्बूस रहिये, खाने पीने और रोज़ मर्रा के मा'मूलात में सुन्नतों का दामन थामे रहिये, अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ के लिये इनफ़िरादी कोशिश जारी रखिये, اِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ चराग़ से चराग़ जलता चला जाएगा, ह़क़ का बोल बाला होगा, शैत़ान का मुंह काला होगा, हर त़रफ़ सुन्नतों का उजाला होगा, दौलते दुन्या का हर आ़शिक़, मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मतवाला होगा। اِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ घर घर नूरे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उजाला होगा।

www.dawateislami.net

शहा ऐसा जज़्बा पाऊं कि मैं ख़ूब सीख जाऊं

तेरी सुन्नतें सिखाना मदनी मदीने वाले

तेरी सुन्नतों पे चल कर मेरी रूह जब निकल कर

चले तुम गले लगाना मदनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 428)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! महब्बत का तक़ाज़ा येह नहीं कि जिस से महब्बत की जाए तो फ़क़त उसी की ज़ात में खो कर अपनी महब्बत को महदूद रखा जाए बल्कि मुहिब तो अपने महबूब से मन्सूब हर शै से प्यार करता है, उस के अहलो इयाल, अइज़्ज़ा व अक़रिबा और दोस्त व अहबाब से भी महब्बत करता है। चुनान्चे,

हसनैने करीमैन को अपनी अवलाद पर तरजीह दी

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि जब ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में **अल्लाह** तआला ने सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان के हाथ पर मदाइन फ़त्ह किया और माले ग़नीमत मदीनए मुनव्वरा में आया तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने मस्जिदे नबवी में चटाइयां बिछवाईं और सारा माले ग़नीमत इन पर ढेर करवा दिया। सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان माल लेने जम्अ हो गए। सब से पहले हज़रते सय्यिदुना इमामे हसन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه खड़े हुवे और कहने लगे : "ऐ अमीरल मोमिनीन ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो मुसलमानों को माल अता फ़रमाया है, उस में से मेरा हिस्सा मुझे अता फ़रमा दें।" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : आप के लिये बड़ी पज़ीराई और करामत (या'नी इज़्ज़त) है।" साथ ही आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने एक हज़ार दिरहम उन्हें दे दिये। उन्हों ने अपना हिस्सा लिया और चले गए, इन के बा'द हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने खड़े हो कर अपना हिस्सा मांगा, आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : आप के लिये बड़ी

www.dawateislami.net

पज़ीराई और करामत (या'नी इ़ज़्ज़त) है।'' साथ ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक हज़ार दिरहम उन्हें भी दे दिये, इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उठे और अपना ह़िस्सा मांगा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : आप के लिये भी बड़ी पज़ीराई और करामत (या'नी इ़ज़्ज़त) है। और साथ ही उन्हें पांच सो दिरहम अ़त़ा फ़रमाए, उन्हों ने अ़र्ज़ किया : ''ऐ अमीरल मोमिनीन ! मैं उस वक़्त भी हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ तल्वार उठा कर जिहाद में शरीक हुवा था जब सय्यिदुना ह़सन व ह़ुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) कम उ़म्र मदनी मुन्ने थे। इस के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें एक एक हज़ार दिरहम और मुझे पांच सो अ़त़ा किये ?'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह सुनना था कि अहले बैत की मह़ब्बत का समन्दर मौजें मारने लगा और इ़श्क़ो मह़ब्बत से सरशार हो कर इरशाद फ़रमाया : जी हां बिल्कुल ! (अगर तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें भी उन के बराबर ह़िस्सा दूं तो) जाओ पहले तुम ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के बाप जैसा बाप लाओ, उन की वालिदा जैसी वालिदा, उन के नाना जैसा नाना, उन की नानी जैसी नानी, उन के चचा जैसा चचा, उन के मामूं जैसा मामूं लाओ और तुम कभी भी नहीं ला सकते। क्यूंकि : اَبُوْهُمَا فَعَلِیُّ الْمُرْتَضٰی उन के वालिद अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं। اُمُّهُمَا فَفَاطِمَةُ الزَّهْرَاء उन की वालिदा सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हैं। جَدُّهُمَا مُحَمَّدُنِ الْمُصْطَفٰی उन के नाना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं। جَدَّتُهُمَا خَدِيْجَةُ الْكُبْرٰى उन की नानी सय्यिदा ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हैं। عَمُّهُمَا جَعْفَرُ بْنُ اَبِیْ طَالِبٍ उन के चचा ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं। خَالُهُمَا اِبْرَاهِيْمُ بْنُ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन के मामूं ह़ज़रते इब्राहीम बिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم وَرَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं। خَالَتَاهُمَا رُقَيَّةُ وَاُمُّ كُلْثُوْمٍ اِبْنَتَا رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم और उन की ख़ालाएं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बेटियां सय्यिदा रुक़य्या और सय्यिदा उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا हैं। (ریاض النضرۃ، ج۱، ص۳۴۰۔ ملتقطاً)

www.dawateislami.net

अमीरे अहले सुन्नत सीरते फ़ारूक़ी के मज़हर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अहले बैत से इ़श्क़ो महब्बत का येह निहायत ही अनोखा अन्दाज़ है कि अपनी सगी अवलाद के मुक़ाबले में अहले बैत के शहज़ादों को दो गुना अ़ता फ़रमाया । इस वाक़िए़ में हमारे लिये भी येह मदनी फूल मौजूद है कि हम भी सादाते किराम से महब्बत व शफ़्क़त से पेश आएं और उन का ख़ूब अदबो एह़तिराम बजा लाएं क्यूंकि याद रहे कि सह़ाबा व अहले बैत رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के इ़लावा सादाते किराम भी सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निस्बत और उन का जुज़ होने की वज्ह से ता'ज़ीमो तौक़ीर के मुस्तह़िक़ हैं, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अहले बैत से महब्बत आज आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के उ़श्शाक़ में भी सीना ब सीना चली आ रही है । येही वज्ह है कि आ़शिक़े फ़ारूक़े आ'ज़म, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ह़ज़राते सादाते किराम की ता'ज़ीमो तौक़ीर बजा लाने में पेश पेश रहते हैं । मुलाक़ात के वक़्त अगर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ को बता दिया जाए कि येह सय्यिद साह़िब हैं तो बारहा देखा गया है कि आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ निहायत ही आ़जिज़ी से सय्यिद ज़ादे का हाथ चूम लिया करते हैं । उन्हें अपने बराबर में बिठाते हैं, सादाते किराम के शहज़ादों से बे पनाह महब्बत और शफ़्क़त से पेश आते हैं और जब कभी शीरनी वग़ैरहा बांटने की तरकीब होती है तो सय्यिदों कोदो गुना पेश फ़रमाते हैं ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर्चे सादाते किराम से महब्बत करने वाले अफ़राद की कमी नहीं मगर अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! बा'ज़ ऐसे लोग भी हैं जो सादाते किराम की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत से ना वाक़िफ़ हैं या फिर उन की ख़िदमत करने में सुस्ती का शिकार हैं, अपनी अवलाद को तो दुन्या की हर आसाइश देने के लिये तय्यार है लेकिन अवलादे सरवरे काइनात

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم या'नी सादात की ख़िदमात के लिये एक रुपिया भी जेबे ख़ास से हाज़िर करने से कतराते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो मेरे अहले बैत में से किसी के साथ अच्छा सुलूक करेगा, मैं रोज़े क़ियामत उस का सिला उसे अ़ता फ़रमाऊंगा।

(الجامع الصغیر للسیوطی ص 533 حدیث 8821)

लिहाज़ा हमें भी अपनी दुन्या व आख़िरत बेहतर बनाने के लिये सादाते किराम के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आना चाहिये और उन की ख़िदमत करते रहना चाहिये ताकि हमें भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा व ख़ुशनूदी ह़ासिल हो सके।

हम को सारे सय्यिदों से प्यार है إِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दो जहां में अपना बेड़ा पार है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर आप सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रह़ दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के इ़श्के़ रसूल के प्यारे प्यारे वाक़िआ़त पढ़ना चाहते हैं तो दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 274 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल इ़श्के़ रसूल के जाम पिलाने वाली बहुत ही प्यारी किताब **"सह़ाबए किराम का इ़श्के़ रसूल"** का ज़रूर मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये। इस किताब को दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net से रीड (या'नी पढ़ा) भी जा सकता है, डाऊन लोड (Download) भी किया जा सकता है और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है।

इसी त़रह़ इ़श्के़ रसूल व इ़श्के़ सह़ाबा व अहले बैत को दिल में मज़ीद बढ़ाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये ! إِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आ'माले सालेह़ा की दौलते बेश बहा ह़ासिल होगी, गुनाहों से नफ़रत का ज़ेह्न बनेगा और हमारी आख़िरत भी संवर जाएगी।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज के बयान में हम ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़वाले से प्यारे प्यारे वाक़िआ़त और ज़िमनन अहम मदनी फूल भी चुनने की सआ़दत ह़ासिल की।

- **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से इसी इश्क़े कामिल के त़ुफ़ैल सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दुन्या में इख़्तियार व इक़्तिदार और आख़िरत में इ़ज़्ज़त व वक़ार मिला।
- सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इश्क़े रसूल की आ'ला व उ़म्दा मिसाल क़ाइम कर के क़ियामत तक आने वाले मुसलमानों को आक़ाए दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इश्क़ करने का सलीक़ा सिखा दिया।
- आज के इस पुर फ़ितन दौर में ज़रूरत इस बात की है कि हम ऐसे मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाएं, जहां आ़शिक़ाने मुस्त़फ़ा का तज़किरा होता है, इन के इश्क़े रसूल के वाक़िआ़त सुनाए जाते हैं, इस की बरकत से हमारे दिल में भी इश्क़े मुस्त़फ़ा की शम्अ़ रोशन होगी और अ़मल का जज़्बा बढ़ेगा।
- اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ऐसा प्यारा मदनी माह़ोल दा'वते इस्लामी पेश कर रही है, लिहाज़ा हम सब भी इस मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाएं, हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ और हफ़्तावार इजतिमाई त़ौर पर होने वाले मदनी मुज़ाकरे में अव्वल ता आख़िर शिर्कत, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और मदनी इन्आ़मात पर अ़मल की कोशिश जारी रखें, हमारी ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा हम भी सुन्नतों के पाबन्द और नेक मुसलमान बन जाएंगे। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

❖ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बनाए नीज़ इ़श्क़े रसूल के तक़ाज़ों को पूरा करते हुवे, ख़ूब ख़ूब सुन्नतें फैलाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए । اٰمین بجاہِ النبی الامین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मजलिसे ख़ुसूसी इस्लामी भाई

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में नेकी की दा'वत और सुन्नतों की ख़िदमत के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त मुतअ़द्दिद शो'बाजात का क़ियाम अ़मल में लाया गया है, इन्ही में से एक शो'बा मजलिस ''ख़ुसूसी इस्लामी भाई'' भी है । दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में गूंगे बह़रे और नाबीना इस्लामी भाइयों को ख़ुसूसी इस्लामी भाई कहा जाता है । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह मजलिस, ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों में नेकी की दा'वत आ़म करने और उन्हें मुआ़शरे का बा किरदार फ़र्द बनाने में मसरूफ़े अ़मल है, इसी के साथ मजलिसे ख़ुसूसी इस्लामी भाई फ़र्ज़ उ़लूम पर मुश्तमिल किताबें शाएअ़ करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है बल्कि गूंगे बह़रे और नाबीना इस्लामी भाइयों को इ़ल्मे दीन सिखाने के साथ साथ अ़स्री उ़लूम से रू शनास करवाने के लिये बहुत कुछ करने का इरादा रखती है । इसी त़रह़ नाबीना इस्लामी भाइयों के लिये भी अ़न क़रीब मद्रसतुल मदीना की तरकीब की जाएगी । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो !

12 मदनी काम कीजिये !

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की बरकत से बे शुमार अफ़राद अपने साबिक़ा त़र्ज़े ज़िन्दगी पर नादिम हो कर गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो गए, सुन्नतों भरी ज़िन्दगी बसर करने लगे और ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों

www.dawateislami.net

में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने वाले बन गए। ज़ैली हल्क़े के 12 मदनी कामों में से हफ़्तावार एक मदनी काम हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत भी है। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के तह्त होने वाला हफ़्तावार सुन्नतों भरा इजतिमाअ़ तिलावते कुरआन, ना'ते रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, सुन्नतों भरे बयान, रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़, ज़िक्रो दुरूद के मदनी फूलों और इ़ल्मे दीन के गुलदस्तों से सजा हुवा होता है।

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह हफ़्तावार सुन्नतों भरा इजतिमाअ़ हुसूले इ़ल्मे दीन का एक बेहतरीन ज़रीआ़ है लिहाज़ा पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की बहारें लूटिये और सुन्नतों की तर्बिय्यत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र इख़्तियार फ़रमा कर अपनी आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा कीजिये। आइये ! तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार सुनते हैं :

मदनी माह़ोल की तर्बिय्यत

ज़िल्अ़ मुज़फ़्फ़राबाद (कश्मीर) के मुक़ीम इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल की बरकात का तज़किरा कुछ इस त़रह़ करते हैं : मैं कुरआने पाक ह़िफ़्ज़ कर रहा था मगर अफ़्सोस ! मेरी अ़मली ह़ालत बहुत ख़राब थी। नेकियों से कोसों दूर, आवारा लड़कों की त़रह़ ज़िन्दगी गुज़ार रहा था। सुन्नतों पर अ़मल करने का शौक़ था न ही इ़बादते इलाही बजा लाने का ज़ौक़। मेरे उजड़े गुलिस्तां में अ़मल की मदनी बहार कुछ इस त़रह़ आई, मेरे एक अ़ज़ीज़ जिन की दुकान पर अक्सर मेरा आना जाना रहता था, एक दिन वोह मुझ से कहने लगे : आप कुरआने करीम ह़िफ़्ज़ कर रहे हैं, लेकिन आप की आ़दातो अत्वार आ़म लड़कों की त़रह़ ही हैं, आप अपने सर पर इ़मामा तो दूर की बात टोपी तक नहीं पहनते, इस त़रह़ आप और स्कूल व कॉलेज के आ़म लड़कों के दरमियान क्या फ़र्क़ रह गया ? मज़ीद कहने लगे : मेरा भांजा भी सरदाराबाद (फ़ैसलाबाद) में दा'वते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना में कुरआने करीम ह़िफ़्ज़ करने की सआ़दत

www.dawateislami.net

हासिल कर रहा है, मगर उस का अख़्लाक़ व किरदार, तरीक़ए गुफ़्तार नीज़ अपने पराए से मिलने का अन्दाज़ क़ाबिले रश्क है । जब वोह रमज़ानुल मुबारक की छुट्टियों में घर आए तो वहां होने वाली अमली तर्बिय्यत देख कर सब घर वाले बे हद खुश हुवे, उन का मा'मूल था कि सुन्नत के मुताबिक़ खाते पीते, घर में दाख़िल होते वक़्त बुलन्द आवाज़ से सब को सलाम करते, वालिदैन के हाथों को चूमते, नज़रें झुका कर गुफ़्तगू करते, खाने के दौरान सुन्नतें बयान करते और सब घर वालों को सुन्नतों पर अमल करने की तरग़ीब दिलाते । मद्रसतुल मदीना के तालिबे इल्म की येह मदनी बहार सुन कर मुझे अपनी बद अमली पर नदामत होने लगी, चुनान्चे, मैं ने हाथों हाथ दा'वते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना में दाख़िला लेने की निय्यत की और उसी साल सरदाराबाद (फ़ैसलाबाद) जा पहुंचा और मद्रसतुल मदीना (फ़ैज़ाने मदीना) मदीना टाऊन में दाख़िला ले कर मदनी माहोल का फ़ैज़ान पाने में मश्ग़ूल हो गया । कुछ ही अर्से में हैरत अंगेज़ तौर पर मुझ में नुमायां तब्दीली वाक़ेअ होने लगी । आहिस्ता आहिस्ता मैं भी दा'वते इस्लामी के मदनी रंग में रंगता चला गया, इमामा शरीफ़ का ताज हर वक़्त मेरे सर पर रहने लगा, नमाज़े पंजगाना का पाबन्द बन गया, हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में भी शिर्कत करने लगा । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सिने 1998 ईसवी में मद्रसतुल मदीना से क़ुरआने करीम हिफ़्ज़ करने की सआदत हासिल की और इस के बा'द जामिअतुल मदीना में दाख़िला ले कर दर्से निज़ामी (आलिम कोर्स) करने में मश्ग़ूल हो गया । जामिअतुल मदीना के सुन्नतों भरे मदनी माहोल में मेरा किरदार मज़ीद अच्छा हो गया, जहां इल्मे दीन का इक्तिसाब हुवा, वहीं अपने इल्म पर अमल करने, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र के ज़रीए उसे दूसरों तक पहुंचाने और मदनी कामों के ज़रीए इस्लाहे उम्मत का सुन्हरी मौक़अ भी हाथ आया । नीज़ शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ से बैअत हो कर क़ादिरी अत्तारी बनने का शरफ़ भी नसीब हो गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत से दर्से

www.dawateislami.net

निज़ामी (आ़लिम कोर्स) मुकम्मल कर चुका हूं और ता दमे तह़रीर तक़रीबन 4 साल से जामिअ़तुल मदीना में तदरीस के फ़राइज़ सर अन्जाम दे रहा हूं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۹۷، حدیث: ۱۷۵)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ के ग्यारह ह़ुरूफ़ की निस्बत से सलाम के 11 मदनी फूल

﴾1﴿ मुसलमान से मुलाक़ात करते वक़्त उसे सलाम करना सुन्नत है। ﴾2﴿ दिन में कितनी ही बार मुलाक़ात हो, एक कमरे से दूसरे कमरे में बार बार आना जाना हो वहां मौजूद मुसलमानों को **सलाम** करना कारे सवाब है। ﴾3﴿ **सलाम** में पहल करना **सुन्नत** है। ﴾4﴿ **सलाम** में पहल करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुक़र्रब है। ﴾5﴿ **सलाम** में पहल करने वाला **तकब्बुर** से भी बरी है। जैसा कि मेरे मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा सफ़ा है : पहले **सलाम** कहने वाला **तकब्बुर** से बरी है। (شُعَبُ الایمان ج۶ ص۴۳۳)

﴾6﴿ **सलाम** में पहल करने वाले पर 90 रह़मतें और जवाब देने वाले पर 10 रह़मतें नाज़िल होती हैं। (کیمیائے سعادت) ﴾7﴿ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم कहने से 10 नेकियां मिलती हैं। साथ में وَرَحْمَةُ اللهِ भी कहेंगे तो 20 नेकियां हो जाएंगी। और وَبَرَكَاتُه शामिल करेंगे तो 30 नेकियां हो जाएंगी। ﴾8﴿ इसी त़रह़ जवाब में وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ कह कर 30 नेकियां ह़ासिल की जा सकती हैं।

www.dawateislami.net

﴾9﴿ **सलाम** का जवाब फ़ौरन और इतनी आवाज़ से देना **वाजिब** है कि सलाम करने वाला सुन ले। **सलाम** और **जवाबे सलाम** का दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ याद फ़रमा लीजिये।

पहले मैं कहता हूं आप सुन कर दोहराइये।

اَلسَّلامُ عَلَیکُمْ (اَسْ-سَلا-مُ-عَلَے-کُمْ)

अब पहले मैं जवाब सुनाता हूं फिर आप इस को दोहराइये :

وَعَلَیکُمُ السَّلام (وَ-عَ-لَیکُ-مُسْ-سَلام)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब बहारे शरीअ़त हि़स्सा **16** (**312** सफ़ह़ात) नीज़ **120** सफ़ह़ात की किताब “सुन्नतें और आदाब” हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तर्बिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा’वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

आ़शिक़ाने रसूल, आएं सुन्नत के फूल
देने लेने चलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान करने के मुतअ़ल्लिक़ मा’रूज़ात

(1) बयान करने से पहले कम अज़ कम एक बार ज़रूर ज़रूर और ज़रूर पढ़ लें
(2) जो कुछ लिखा है वोही सुनाएं, अपनी त़रफ़ से कमी-बेशी न करें
(3) हेडिंग, ह़वालाजात, आयात, और अ़रबी इ़बारात हरगिज़ न पढ़ा करें
(4) बयान के हुसूल के लिये अपनी काबीना के कारकर्दगी ज़िम्मेदार से राबित़ा रखें
(5) अगर बराहे रास्त बयान न मिल सके तो वेब साइट से डाऊन लोड कर लें

✍ राबित़ा ✍

MAJLISE TARAJIM, BARODA (DAWATE ISLAMI)
translation.baroda@dawateislami.net (+ 91 9327776311)
www.dawateislami.net

सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक और 2 दुआ़

﴾1﴿ शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِى الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा तो मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं ।** (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص ١٥١ ملخصًا)

﴾2﴿ तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।** (اَیضاً ص ٦٥)

﴾3﴿ रह़मत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर **रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं ।** (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ٢٧٧)

﴾4﴿ छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِىْ عِلْمِ اللّٰهِ صَلَاةً دَآئِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰهِ

ह़ज़रते अह़मद सावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** ह़ासिल होता है । (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات)

www.dawateislami.net

﴾5﴿ कुर्बे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के दरमियान बिठा लिया । इस से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को त़अज्जुब हुवा कि **येह कौन ज़ी मर्तबा है ! ! !** जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया **:** येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है । (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ١٢٥)

﴾6﴿ दुरूदे शफ़ाअ़त :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

शाफ़ेए उमम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है **:** जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है ! ! !**

(الترغیب والترہیب ج ٢ ص ٣٢٩، حدیث ٣١)

﴾1﴿ एक हज़ार दिन की नेकियां :

جَزَى اللهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया **:** इस को पढ़ने वाले के लिये **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं ।** (مجمع الزوائد ج ١٠ ص ٢٥٤ حدیث ١٧٣٠٥)

﴾2﴿ हर रात इबादत में गुज़ारने का आसान नुस्ख़ा

ग़राइबुल कुरआन सफ़ह़ा 187 पर एक रिवायत नक़्ल की गई है कि जो शख़्स रात में येह दुआ 3 मरतबा पढ़ लेगा तो गोया उस ने शबे क़द्र को पा लिया । लिहाज़ा हर रात इस दुआ को पढ़ लेना चाहिये ।

दुआ येह है **:**

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ ، سُبْحٰنَ اللهِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْم

(या'नी ख़ुदाए ह़लीम व करीम के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और अ़र्शे अ़ज़ीम का परवर दगार है) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. **1163-1164**)

www.dawateislami.net